# Indian Culture and Social Issues

Ms. Rekha Kumari

Assistant Professor

Department of Sanskrit

Shivaji College

# भारतीय संस्कृति

- भारतीय संस्कृति से तात्पर्य है भारत की संस्कृति।
- भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृतियों में सर्वोच्च पद प्राप्त है। भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताएं हैं।
- **सर्वाधिक प्राचीन।**
- **अक्षुण्ण प्रवाह।**
- **समन्वयभाव तथा विचार सहिष्णुता।**
- **ग्रहणशीलता।**
- **अनुकूलता एवं परिवर्तनशीलता।**
- **आध्यात्मिका।**

- सर्वांगीणता।
- संचरणशीलता।
- धर्मपरायणता।
- आशावाद।
- आस्था एवं कर्मवाद।
- पुनर्जन्मवाद।
- अवतारवाद।
- विश्वकल्याण एवं विश्वबन्धुत्व की भावना।
- त्यागभावना।
- साम्यवाद।

# सर्वाधिक प्राचीन

- यह विश्व की उपलब्ध सभी संस्कृतियों में प्राचीनतम है।
- भारतीय वाङ्मय के वेद तो विश्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं तथा सिन्धु घाटी की खुदाई से प्राप्त अवशेषों के साक्ष्य से यह तथ्य हो चुका है कि यूरोप, रूस, अमेरिका आदि की संस्कृतियों के जन्म से बहुत पूर्व भारतीय संस्कृति परिपुष्ट थी।
- अतः भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है।

# अक्षुण्ण प्रवाह

- भारतीय संस्कृति का प्रवाह प्ररम्भ आज तक अटूट रहा है।
- विश्व की अनेक संस्कृतियां समय के साथ परिपुष्ट हुयी और काल के प्रवाह से लुप्त भी हो गयीं।
- आज अनेक ध्वंसावशेषों मात्र से उन संस्कृतियों का परिज्ञान हो पाता है।
- कुछ संकृतियां विभिन्न परिवर्तनों में पड़ कर इतनी बदल गई कि उन्हें मूल रूप में पहचाना जाना सम्भव नही रहा।
- किन्तु भारतीय संस्कृति दीर्घजीवी सिद्ध हुई।
- भाषा के क्षेत्र में संस्कृत आज भी विद्वद् समाज में पढी-लिखी जाती है।
- आज भी भारतीय संस्कृति का अक्षुण्ण प्रवाह देखा जा सकता है।

# समन्वयभाव

- विश्व की अनेक संस्कृतियों में कट्टरता, मदान्धता एवं पूर्वाग्रह के तत्व दिखते हैं।
- किन्तु इसके विपरीत भारतीय संस्कृति में सहनशीलता देखने को मिलती है।
- इस संस्कृति ने प्रत्येक व्यक्ति को विचार, धर्म एवं विश्वास की स्वन्त्रता दी है।
- इस समन्वयभाव के कारण भारत में सारे धार्मिक विश्वास, सारी विभिन्न पूजा विधियाँ, रहन-सहन, खान –पान आदि सभी एक साथ स्वीकृत हैं।

# ग्रहणशीलता

- इस विशेषता के कारण ही भारतीय संस्कृति निरन्तर सजीव और सक्रिय है।
- भारतीय संस्कृति ने केवलमात्र विभिन्न नई प्रवृत्तियों को सहन ही नही किया है अपितु आत्मसात भी किया है।
- भारतीय संस्कृति ने अत्यन्त प्राचीन काल से आज तक अपने संपर्क में आने वाली द्राविड़, यूनानी, मुगल, ईसाई आदि सभी संस्कृतियों के विभिन्न सुंदर अंशों को ग्रहण कर लिया है।
- विनाश एवं विध्वंस भारतीय संस्कृति का गुण नही रहा है अपियु इसका गुण तो ग्रहण एवं संरक्षण रहा है।

# अनुकूलता एवं परिवर्तनशीलता

- भारतीय संस्कृति में समय के अनुसार ढल जाने की अद्‌भुत क्षमता है।
- इस संस्कृति में आश्चर्यजनक लचकीलापन है। इसी कारण यह बाह्य आघातों से नष्ट नहीं हुयी।
- जीवशास्त्र का यह सर्वमान्य नियम है कि वही प्राणी दीर्घजीवी होता है जो अपने को समय और परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तित कर लेता है।
- किन्तु भारतीय संस्कृति अपने अनुकूलता के गुण के कारण विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित बनी रही।